एक्सआईएसएस • 'वृद्धावस्थाः एक वरदान या बोझ' पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

बढ़ती उम्रदराज आबादी को देखते हुए नीति बनाई जानी चाहिए, बुजुर्गों को आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाना होगा

सिटी रिपोर्टर | रांची

जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विस और भारत सरकार के

डॉ. रीता कुमारी

सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले राष्ट्रीय सामाजिक रक्षा संस्थान (एनआईएसडी) के सहयोग से कैंपस में गुरुवार को 'वृद्धावस्थाः एक वरदान या बोझ' शीर्षक पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू हुई। कार्यशाला में वृद्धावस्था की चुनौतियों और अवसरों की दोहरी वास्तविकताओं पर चर्चा की गई। निदेशक डॉ. जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे ने कहा कि वृद्धावस्था एक अपरिवर्तनीय वास्तविकता है और हमारी संस्कृति और मूल्यों का अभिन्न अंग है। समन्वयक डॉ. संत कुमार ने भारत की बढ़ती उम्रदराज आबादी को देखते हुए नीतिगत हस्तक्षेप और सामुदायिक सहभागिता की आवश्यकता को रेखांकित किया। प्रो. डॉ. रीता कुमारी ने बुजुर्गों के लिए सहायता प्रणाली प्रदान करने में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बुजुर्गों को केवल जीवित रहने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाना चाहिए। कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिकों के लिए राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे कल्याणकारी उपायों पर चर्चा की। रूरल मैनेजमेंट के प्रमुख डॉ. अनंत कुमार ने वरिष्ठ नागरिक संघ कैसे सक्रिय वृद्धावस्था को बढ़ावा देते हैं, इस पर चर्चा की।

झारखंड के बुजुर्गों में बीमारी की दर राष्ट्रीय औसत से कम

2011 की जनगणना के अनुसार, झारखंड में 23.56 लाख वरिष्ठ नागरिक हैं, जो आबादी का 8.4% हिस्सा हैं। 60 वर्ष की आयु में जीवन प्रत्याशा पुरुषों के लिए 18.1 वर्ष व महिलाओं के लिए 16.8 वर्ष है। वृद्धावस्था निर्भरता अनुपात 12.7 है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक बोझ है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में 71% बुजुर्ग महिलाएं और 23% पुरुष, तथा शहरी क्षेत्रों में 66% बुजुर्ग महिलाएं और 28% पुरुष पूरी तरह से आर्थिक रूप से आश्रित हैं। यह भी देखा गया है कि झारखंड के बुजुर्गों में स्व-अनुभूत बीमारी की दर राष्ट्रीय औसत से कम है।

PRESS:DAINIK BHASKAR

बुजुर्गों को आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाना होगा

रांची. एसआइएसएस में गुरुवार को वृद्धावस्था : एक वरदान या बोझ शीर्षक पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू हुई. निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर ने कहा कि वृद्धावस्था एक अपरिवर्तनीय वास्तविकता है और हमारी संस्कृति और मूल्यों का एक अभिन्न अंग है. डॉ संत कुमार ने भारत की बढ़ती उम्रदराज आबादी को देखते हुए नीतिगत हस्तक्षेप और सामुदायिक सहभागिता की आवश्यकता पर चर्चा की. रांची विवि की सहायक प्रोफेसर डॉ रीता कुमारी ने बुजुर्गों के लिए सहायता प्रणाली प्रदान करने में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका पर चर्चा की. उन्होंने आग्रह किया कि हमें बुजुर्गों को केवल जीवित रहने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाना चाहिए.

PRESS:PRABHAT KHABAR

वृद्धावस्था पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

रांची। एक्सआईएसएस में 'वृद्धावस्था : एक वरदान या बोझ', विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला गुरुवार को शुरू हुई। पहले दिन वृद्धावस्था की चुनौतियों और अवसरों की वास्तविकताओं पर चर्चा हुई। निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे ने कहा कि वृद्धावस्था एक अपरिवर्तनीय वास्तविकता और हमारी संस्कृति और मूल्यों का एक अभिन्न अंग है।

PRESS:HINDUSTAN

National Workshop on 'The Old Age: A Blessing or A Burden' held at XISS

PNS : RANCHI

The Xavier Institute of Social Service (XISS), Ranchi, in collaboration with the National Institute of Social Defence (NISD), under the Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India, began a two-day National Workshop titled "The Old Age: A Blessing or A Burden" on Thursday at XISS. Today, the world is facing a demographic shift toward an ageing population, this workshop addressed the dual realities of old age its challenges and opportunities.

As per the 2011 Census, Jharkhand has 23.56 lakh senior citizens, making up 8.4% of its population. The life expectancy at age 60 is 18.1 years for males and 16.8 for females. The old-age dependency ratio stands at 12.7, with a greater burden in rural areas. According to the National Sample Survey, 71% of elderly females and 23% of males in rural areas, and 66% of elderly females and 28% of males in urban areas are fully economically dependent. It is also observed that self-perceived illness rates among Jharkhand's elderly are lower than the national average.

The workshop began with a ceremonial lamp-lighting, followed by a welcome address by Dr Joseph Marianus Kujur SJ, Director, XISS. He emphasized ageing with dignity and inclusion, aligning with XISS's mission of social justice. Dr Kujur said, "Ageing is an irreversible reality and an integral part of our culture and values. XISS believes in ageing with grace and upholds a theology of ageing, encouraging a positive outlook toward growing older. It is imperative to highlight three key aspects here: the challenges of getting old, general factors influencing individual ageing, and the socio-economic dimensions, which need our utmost attention now."

Earlier, Dr Sant Kumar, Workshop Coordinator, outlined the need for policy intervention and community engagement given India's ageing population. The first technical session, delivered by Dr Reeta Kumari, Assistant Professor, Ranchi University, explored the "Role of NGOs in Providing Support Systems for the Elderly." She highlighted how modernization and migration have isolated seniors, with NGOs stepping in to offer old-age homes, healthcare, counselling, and legal aid. "We must empower the elderly to thrive, not just survive," she urged, viewing them as carriers of wisdom.

Dr Ashok Kumar Sandil SJ, Coordinator, Xavier Institute of Polytechnic & Technology, discussed the 'Welfare Measures by the State Government for Senior Citizens' in the second session. He detailed Jharkhand's initiatives, including the Sarvajan Pension Yojana and Indira Gandhi National Old Age Pension Scheme, alongside healthcare programs like Rashtriya Vayoshri Yojana. However, he noted rural implementation gaps and called for greater awareness.

Day one of the workshop sparked vibrant discussions, shifting perceptions of old age from decline to fulfilment. The workshop on the second day will cover national policies, legal frameworks, intergenerational bonding, and senior care experiences.

PRESS:PIONEER

एक्सआईएसएस में वृद्धावस्था- एक वरदान या बोझ पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

वरीय संवाददाता

रांची : जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विस (एसआईएसएस) और भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले राष्ट्रीय सामाजिक रक्षा संस्थान (एनआईएसडी) के सहयोग से संस्थान के रांची स्थित कैंपस में गुरुवार को वृद्धावस्था: एक वरदान या बोझ शीर्षक पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू हुई। आज, दुनिया में जनसांख्यिकीय बदलाव के कारण जनसंख्या वृद्धि होती जा रही है। इस कार्यशाला में वृद्धावस्था की चुनौतियों और अवसरों की दोहरी वास्तविकताओं पर चर्चा की गई। 2011 की जनगणना के अनुसार, झारखंड में 23.56 लाख वरिष्ठ नागरिक हैं, जो इसकी आबादी का 8.4 प्रतिशत है। 60 वर्ष की आयु में जीवन प्रत्याशा पुरुषों के लिए 18.1 वर्ष और महिलाओं के लिए 16.8 वर्ष है। वृद्धावस्था निर्भरता अनुपात 12.7 है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक बोझ है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में 71 प्रतिशत बुजुर्ग महिलाएं और 23 प्रतिशत पुरुष, तथा शहरी क्षेत्रों में 66 प्रतिशत बुजुर्ग महिलाएं और 28 प्रतिशत पुरुष पूरी तरह से आर्थिक रूप से आश्रित हैं। यह भी देखा गया है कि झारखंड के बुजुर्गों में स्व-अनुभूत बीमारी की दर राष्ट्रीय औसत से कम है। संस्थान के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने एक्सआईएसएस के सामाजिक न्याय के मिशन के साथ तालमेल बिठाते हुए गरिमा और समावेश के साथ वृद्धावस्था पर जोर दिया। कार्यशाला समन्वयक डॉ संत कुमार ने भारत की बढ़ती उम्रदराज आबादी को देखते हुए नीतिगत हस्तक्षेप और सामुदायिक सहभागिता की आवश्यकता को रेखांकित किया। रांची विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ रीता कुमारी ने बुजुर्गों के लिए सहायता प्रणाली प्रदान करने में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका पर चर्चा की। डॉ अशोक कुमार मंडल एसजे ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए राज्य सरकार द्वारा कल्याणकारी उपायों पर चर्चा की। डॉ अनंत कुमार ने वरिष्ठ नागरिक संघ कैसे सक्रिय वृद्धावस्था को बढ़ावा देते हैं पर चर्चा की । समन्वयक डॉ उमा साहा व अनुश्री सहाय ने संचालन किया।

PRESS:SANMARG

“वृद्धावस्था: एक वरदान या बोझ” पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विस (एसआईएसएस) और भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले राष्ट्रीय सामाजिक रक्षा संस्थान (ऍनआईएसडी) के सहयोग से संस्थान के रांची स्थित कैंपस में गुरुवार को “वृद्धावस्था: एक वरदान या बोझ” शीर्षक पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू हुई। आज, दुनिया में जनसांख्यिकीय बदलाव के कारण जनसंख्या वृद्धि होती जा रही है। इस कार्यशाला में वृद्धावस्था की चुनौतियों और अवसरों की दोहरी वास्तविकताओं पर चर्चा की गई।

2011 की जनगणना के अनुसार, झारखंड में 23.56 लाख वरिष्ठ नागरिक हैं, जो इसकी आबादी का 8.4% है। 60 वर्ष की आयु में जीवन प्रत्याशा पुरुषों के लिए 18.1 वर्ष और महिलाओं के लिए 16.8 वर्ष है। वृद्धावस्था निर्भरता अनुपात 12.7 है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक बोझ है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों में 71% बुजुर्ग महिलाएं और 23% पुरुष, तथा शहरी क्षेत्रों में 66% बुजुर्ग महिलाएं

23% पुरुष, तथा शहरी क्षेत्रों में 66% बुजुर्ग महिलाएं और 28% पुरुष पूरी तरह से आर्थिक रूप से आश्रित हैं। यह भी देखा गया है कि झारखंड के बुजुर्गों में स्व-अनुभूत बीमारी की दर राष्ट्रीय औसत से कम है।
इससे पहले कार्यशाला की शुरुआत औपचारिक दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई, जिसके बाद संस्थान के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने एक्सआईएसएस के सामाजिक न्याय के मिशन के साथ तालमेल बिठाते हुए गरिमा और समावेश के साथ वृद्धावस्था पर जोर दिया। डॉ कुजूर ने कहा, "वृद्धावस्था एक अपरिवर्तनीय वास्तविकता है और हमारी संस्कृति और मूल्यों का एक अभिन्न अंग है।

संस्थान वृद्धावस्था की गरिमा में विश्वास रखता करता है और इसके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। इस कार्यशाला में तीन प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डालना जरूरी है: वृद्ध होने की चुनौतियां, व्यक्तिगत वृद्धावस्था को प्रभावित करने वाले सामान्य कारक और सामाजिक-आर्थिक आयाम, जिन पर हमें अभी सबसे ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है।"
इससे पहले, कार्यशाला समन्वयक डॉ संत कुमार ने भारत की बढ़ती उम्रदराज आबादी को देखते हुए नीतिगत हस्तक्षेप और सामुदायिक सहभागिता की आवश्यकता को रेखांकित किया। रांची विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ रीता कुमारी द्वारा दिए गए पहले तकनीकी सत्र में “बुजुर्गों के लिए सहायता प्रणाली प्रदान करने में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका” पर

चर्चा की गई। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे आधुनिकीकरण और प्रवास ने वरिष्ठ नागरिकों को अलग-थलग कर दिया है, जिसके कारण गैर सरकारी संगठन वृद्धाश्रम, स्वास्थ्य सेवा, परामर्श और कानूनी सहायता प्रदान करने के लिए आगे आ रहे हैं। उन्होंने आग्रह किया कि “हमें बुजुर्गों को केवल जीवित रहने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाना

चाहिए,” उन्होंने उन्हें ज्ञान के वाहक के रूप में देखा। जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिटेक्निक एंड टेक्नोलॉजी के समन्वयक डॉ अशोक कुमार संडिल एसजे ने दूसरे सत्र में ‘वरिष्ठ नागरिकों के लिए राज्य सरकार द्वारा कल्याणकारी उपायों’ पर चर्चा की। उन्होंने झारखंड की पहलों, जिसमें सर्वजन पेंशन योजना और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना के साथ-साथ राष्ट्रीय वयोश्री योजना जैसे स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रम शामिल हैं, के बारे में विस्तार से बताया। हालांकि, उन्होंने ग्रामीण कार्यान्वयन में कमियों को नोट किया और अधिक जागरूकता का आह्वान किया।
दिन के तीसरे सत्र में डॉ कुजूर ने “विषय की व्यापक समझ” प्रस्तुत की जिसमें सांस्कृतिक और दार्शनिक अंतर्दृष्टि का मिश्रण करते हुए, उन्होंने वृद्धावस्था को "जीवन की पूरी तरह से जीए गए फसल" के रूप में वर्णित किया, समाज से ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र बनाने का आग्रह किया जहां बुजुर्ग मूल्यवान और सक्रिय महसूस करें। एक्सआईएसएस के रूरल मैनेजमेंट कार्यक्रम के प्रमुख, डॉ अनंत कुमार द्वारा अंतिम सत्र में

कार्यक्रम के प्रमुख, डॉ अनंत कुमार द्वारा अंतिम सत्र में "वरिष्ठ नागरिक संघ कैसे सक्रिय वृद्धावस्था को बढ़ावा देते हैं" पर चर्चा की गयी। उन्होंने बताया कि कैसे ऐसे

समूह सामाजिक संबंध, फिटनेस और कौशल निर्माण को बढ़ावा देते हैं और वरिष्ठ नागरिकों की भलाई को बढ़ाने के लिए अधिक निवेश की वकालत करते हैं। इस राष्ट्रीय कार्यशाला का समन्वयन डॉ उमा साहा, संयोजक द्वारा किया गया, जबकि सुश्री आयुर्षी सहाय, रिसर्च एसोसिएट, एक्सआईएसएस ने वर्कशॉप का संचालन किया। कार्यशाला के पहले दिन जीवंत चर्चा हुई, जिसने बुढ़ापे की धारणाओं को गिरावट से पूर्णता में बदल दिया। दूसरे दिन की कार्यशाला में राष्ट्रीय नीतियों, कानूनी ढांचे, अंतर-पीढ़ीगत बंधन और वरिष्ठ देखभाल के अनुभवों को शामिल किया जाएगा।

PRESS:NEWSROOM